DSSSB TGT & PGT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
समास
LIVE
15-07-2024 05:00 PM

सम् + अस् + घञ्

समास

> पदविधि

संधि ⇒ वर्णविधि

समसनं समासः ऐसी परिभाषा लघुसिद्धान्तकौमुदी में दी गई है। सम् - उपसर्गपूर्वक असुँ क्षेपणे धातु से भाव में घञ् (अ) प्रत्यय कर घञ् के ञित्त्व के कारण "अत उपधायाः" से उपधावृद्धि करने पर 'समास' शब्द निष्पन्न होता है। संक्षेप, संक्षिप्तीकरण या मिलाने को समास कहते हैं। यह शब्द व्याकरण में योगरूढ या पारिभाषिक माना गया है। अतः प्रत्येक संक्षेप को समास नहीं कहते, अपितु जब दो या दो से अधिक पद मिल कर एक पद हो जाते हैं तो उसे समास कहते हैं।

समास हो जाने पर उन समस्यमान पदों की प्रायः अपनी-अपनी विभक्तियां लुप्त हो जाती हैं (परन्तु उन का अर्थ तो रहता ही है)। पुनः नये सिरे से समास को एक शब्द या प्रातिपदिक मान कर नई विभक्ति आती है। तब वह एक प्रकार से नया पद बन जाता है। स्वरप्रक्रिया में तब उसे एकपद समझ कर ही स्वर लगाया जाता है।

विग्रह पद/सामासिक पद

दशरथ का पुत्र = दशरथस्य पुत्रः

= दशरथपुत्रः

समास का उदाहरण यथा - गङ्गायाः जलम् = गङ्गाजलम्। यहां 'गङ्गायाः' तथा 'जलम्' इन दो पदों के मिलने से 'गङ्गाजलम्' यह एकपद बन गया है। इसी प्रकार कृष्णं श्रितः - कृष्णश्रितः, हरिणा त्रातः हरित्रातः, चोराद् भयम् चोरभयम् इत्यादि स्थलों में समास जानना चाहिये। यह समास पाँच प्रकार का होता है।

① केवल समास
② अव्ययीभाव समास → पूर्व पदार्थ प्रधान
③ तत्पुरुष समास → उत्तर पदार्थ प्रधान
④ द्वन्द्व समास → उभय पदार्थ प्रधान
⑤ बहुव्रीहि समास → अन्य पदार्थ प्रधान

उदा०- उपकृष्णम् गच्छति ।
↓
कृष्णस्य समीपं गच्छति ।

② सीतापुत्रः राजा भविष्यति ।
↓
सीतायाः पुत्रः राजा भविष्यति

1) विशेषसंज्ञाविनिर्मुक्तः केवलसमासः प्रथमः जब समास तो किया जाता है परन्तु उसकी शास्त्र में अव्ययीभाव, तत्पुरुष आदि की तरह कोई विशेष संज्ञा नहीं की गई होती तो उसे केवलसमास ही कहा जाता है। यह समास 'सह सुपा' सूत्र से या इसके योग विभाग द्वारा ही सम्पन्न होता है। यथा पूर्व भूतः भूतपूर्वः।

यहाँ "सह सुपा" से समास तो हुआ है परन्तु उस का कोई विशेष नाम नहीं रखा गया अतः यह केवलसमास ही कहा जायेगा। इसी समास को प्राचीन परम्परा में सुप्सुपासमास नाम से जाना जाता है।

यह नाम इस लिये रखा गया है कि इस में एक सुबन्त दूसरे सुबन्त के साथ विशेषनाम के विना समास को प्राप्त होता है। इस समास के अन्य उदाहरण 'वागर्थाविव' इत्यादि हैं। आगे स्पष्ट किये जायेंगे।

2) प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधानः अव्ययीभावः द्वितीयः - अव्ययीभाव एक अन्वर्थ अर्थात् अर्थानुसारी संज्ञा है। इस समास में प्रायः पूर्वपद अव्यय होता है और उत्तरपद अनव्यय, परन्तु समास होने पर समस्त पद अव्यय बन जाता है। अनव्ययम् अव्ययं भवति - अव्ययीभावः। अव्ययीभावसमास में प्रायः पूर्वपद के अर्थ की प्रधानता होती है।

यथा - हरौ इति अधिहरि (हरि में)। यहाँ 'अधि' यह पूर्वपद है जो अधिकरण का द्योतक है, अतः 'अधिहरि' इस समस्त में भी अधिकरण की प्रधानता है। इसी प्रकार कृष्णस्य समीपम् - उपकृष्णम्, शक्तिमनतिक्रम्य यथाशक्ति इत्यादि उदाहरण हैं।

3) प्रायेण उत्तरपदार्थ प्रधानः तत्पुरुषसमासः तृतीयः। तत्पुरुषभेदः कर्मधारयः। कर्मधारयभेदो द्विगुः। 'तत्पुरुषः सूत्र के अधिकार में विहित समास 'तत्पुरुष' कहा जाता है। द्वितीया विभक्त्यन्त से लेकर सप्तमी विभक्त्यन्त तक जिस जिस विभक्त्यन्त का उत्तरपद के साथ समास का विधान किया जाता है वह तत्पुरुषसमास उसी विभक्ति के नाम से व्यवहृत होता है।

यथा 'कष्टं श्रितः कष्टश्रितः यहाँ द्वितीयातत्पुरुष समास, हरिणा त्रातः हरित्रातः यहाँ तृतीयातत्पुरुषसमास, 'भूताय बलिः भूतबलिः' यहां चतुर्थीतत्पुरुष समास, 'चोराद् भयम् चोरभयम् यहाँ पञ्चमीतत्पुरुषसमास, 'राज्ञः पुरुषः राजपुरुषः षष्ठीतत्पुरुष समास तथा 'अक्षेषु शौण्डः अक्षशौण्डः' यहां सप्तमीतत्पुरुष समास है। इस समास में उत्तरपद के अर्थ की प्रायः प्रधानता होती है।

तत्पुरुष

- समानाधिकरण
  - कर्मधारय
- व्यधिकरण
  - तत्पुरुष - द्वितीया … सप्तमी

यथा पुरुषः - राजपुरुषः, यहां षष्ठीतत्पुरुषसमास में उत्तर पद 'पुरुषः' के अर्थ की ही प्रधानता है। यदि कहें कि 'राजपुरुषमानय' (राजपुरुष को लाओ) तो राजसम्बन्धी पुरुष का ही आनयन क्रिया में अन्वय होगा राजा का नहीं, वह तो केवल पुरुष को ही विशिष्ट करेगा।

तत्पुरुषसमास का ही भेद है - कर्मधारयसमास। तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः। जब तत्पुरुषसमास में दोनों पदों का वाच्य एक ही हो अथवा जिन दो पदों के वाच्य का अधिकरण समान हो उसे कर्मधारय समास कहते हैं। यथा - नीलमुत्पलम् नीलोत्पलम् (नीला कमल) इत्यादि।

इस कर्मधारयसमास में जब पूर्वपद संख्यावाचक होता है तो उसे "संख्यापूर्वो द्विगुः" अर्थात् द्विगुसमास कहते हैं यह कर्मधारय के भेद के रूप में जाना जाता है। यथा - पञ्चानां गवां समाहारः - पञ्चगवम्। अन्य उदाहरण त्रिफला, त्रिलोकी आदि।

4) प्रायेण अन्यपदार्थ प्रधानः बहुव्रीहिः चतुर्थः। बहुव्रीहिः समास शेषो बहुव्रीहिः (965) के अधिकार में जिस समास का विधान किया जाता है उसे बहुव्रीहिसमास कहते हैं। इस समास में समस्यमान पदों से भिन्न तत्सम्बद्ध किसी अन्य पद के अर्थ की ही प्रायः प्रधानता होती है। यथा पीतम् अम्बरं यस्य स पीताम्बरः (पीले कपड़े हैं जिस के वह, अर्थात् श्रीकृष्ण आदि)। यहां पीत और अम्बर पदों से भिन्न अन्य पद के अर्थ की प्रधानता है। समस्यमान पद उस अन्य पद के केवल विशेषण बन कर रह गये हैं।

अत एव कहा भी गया है सर्वोपसर्जनो बहुव्रीहिः (बहुव्रीहिसमास में सब पद उपसर्जन अर्थात् गौण होते हैं)। -

यहाँ भी प्रायेण इस पद का प्रयोग इसलिए किया गया है क्योकि द्वित्राः इत्यादि समासों का ग्रहण भी बहुव्रीहि में हो जाए। जबकि द्वौ वा त्रयो वा इस तरह का विग्रह होने से यहाँ उभयपदार्थ प्रधान हैं।

5) प्रायेण उभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः पञ्चमः। 'च' के अर्थ (समाहार तथा इतरेतरयोग) में "चार्थे द्वन्द्वः सूत्र द्वारा द्वन्द्व समास का विधान किया जाता है। द्वन्द्व समास में दोनों (या दो से अधिक सब) पदों के अर्थों की प्रायः प्रधानता होती है। यथा हरिश्च हरश्च हरिहरौ। यहां दोनों पदों के अर्थों का प्राधान्य होने से क्रिया में दोनों का ही अन्वय होता है।

यहाँ भी लक्षण में प्रायः शब्द का प्रयोग इसलिए किया क्योंकि इतरेतरयोगद्वन्द्व में ही सभी पदार्थों की प्रधानता होती है। जबकि समाहार द्वन्द्व में समाहार (समूह) की।

यथा - दन्ताश्च ओष्ठौ च दन्तोष्ठम् (दाँतों और ओठों का समाहार), तो इस प्रकार से आपको ज्ञात हुआ कि उपर्युक्त जो भी लक्षण समासों के कहे हैं उन सभी में कुछ वैपरीत्य दृष्टिगत होता है और एक समास में किसी दूसरे समास के लक्षण की प्रतीति होती है, इसलिए सभी लक्षणों में प्रायेण/प्रायः ऐसा कह दिया गया।

वृत्ति जो है वह पदसम्बन्धी विधि है और वह समर्थाश्रित होती है। तो पदसम्बन्धी विधि समर्थाश्रित होती है यह बताने वाले सूत्र का विवेचन आपके समक्ष प्रस्तुत करते हैं-

सूत्र - समर्थः पदविधिः 2.1.1

सूत्रवृत्ति - पदसम्बन्धी यो विधिः स समर्थाश्रितो बोध्यः ।

सूत्रानुवाद - पदविधि अर्थात् पदसम्बन्धी कार्य (पदों से सम्बन्ध रखने वाला कार्य) समर्थ पदों के आश्रित होता है।

व्याख्या - समर्थः, पदविधिः यह पदच्छेद है। यह द्विपदात्मक सूत्र है। विधीयते इति विधिः = कार्यम्। विपूर्वक डुधाञ् धारण-पोषणयोः धातु से कर्म में उपसर्गे घोः किः सूत्रद्वारा 'कि' (इ) प्रत्यय कर आकार का लोप करने पर 'विधि' शब्द निष्पन्न होता है।

विधान किये गये कार्य को विधि कहते हैं। पदानां विधिः पद विधिः, यहाँ सम्बन्धषष्ठीतत्पुरुषसमासः। 'समर्थः पद यहाँ 'समर्थाश्रितः' के अर्थ में लाक्षणिक है। पदविधिः पदों से संबन्ध रखने वाला कार्य (समर्थः) समर्थ पदों के आश्रित होता है। यह एक परिभाषासूत्र है।

अतः प्रस्तुत परिभाषा के कारण सम्पूर्ण अष्टाध्यायी में जहां-कहीं पदसम्बन्धी कार्य कहा जायेगा वह कार्य समर्थ पदों के आश्रय पर ही होगा असमर्थ पदों के नहीं। आकाङ्क्षा आदि के वशात् परस्पर सम्बद्धार्थ होना ही पदों का सामर्थ्य है।

समास पदसम्बन्धी विधि (कार्य) है क्योंकि इस में एक सुबन्त का दूसरे सुबन्त के साथ योजन होता है अतः प्रकृत परिभाषा द्वारा यह समास समर्थ पदों के आश्रित होगा। जैसे राज्ञः पुरुषः - राजपुरुषः (राजा का सेवक)।

यहां दोनों पद समर्थ हैं, स्वस्वामिभावसम्बन्ध से परस्पर सम्बद्ध हैं अतः यहां समास हो कर 'राजपुरुषः' ऐसा समस्त रूप बन जाता है। परन्तु 'भार्या राज्ञः पुरुषो देवदत्तस्य' (स्त्री राजा की है, पुरुष देवदत्त का है) यहां 'राज्ञः' और 'पुरुषः' का समास नहीं होता, कारण कि ये दोनों पद परस्पर निरपेक्ष होने से असमर्थ हैं। राज्ञः का सम्बन्ध भार्या के साथ है, न कि पुरुषः के साथ, एवं पुरुषः का देवदत्तस्य के साथ है न कि राज्ञः के साथ। इसी प्रकार पश्यति कृष्णं श्रितो देवदत्तो गुरुकुलम् यहां पर कृष्णं श्रित में समास नहीं होता।